Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

2. राष्ट्रभाषा हिन्दी: स्वतंत्रता आंदोलन और महात्मा गांधी

डॉ. अम्ब्रीश त्रिपाठी
एसोशिएट प्रोफेसर
एम.यू. एम. टी., बिलासपुर, छत्तीसगढ़
ईमेल- ambreesh.tripathi@gmail.com

शोध सार

गुजराती भाषी गांधी जी ने हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए जो प्रयत्न किया वह केवल भाषा तक ही सीमित नहीं था, बल्कि हिन्दी भाषा को विदेशी भाषा अंग्रेजी के बरक्स खड़ा करने के लिए जो मुहिम चलाई वह बहुत ही कारगर रही। गांधी ने इसके लिए दूसरों को हिन्दी भाषा में कार्य करने के लिए कहने से पहले स्वयं हिन्दी भाषा पर काम करते हैं। अपनी पत्रिका को हिन्दी में निकालते हैं। गांधी जी भाषा को राष्ट्र के परिचायक के रूप में देखते हैं। इस शोध पत्र में स्वतंत्रतता आंदोलन में राष्ट्र भाषा के लिए गांधी जी ने जो कार्य किया है उसका विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द- हिन्दी, राष्ट्र भाषा, देवनागरी और महात्मा गांधी।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारत में भाषा भी एक अहम मुद्दा था। सभी को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी भाषा ने महती भूमिका निभाई। हिन्दी भाषा की अहमियत गांधी भली-भांति समझते थे। उनकी चिंता राष्ट्र भाषा को लेकर थी। आज़ाद भारत की राष्ट्र भाषा क्या होगी, जिसकी स्वीकार्यता उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक हो। भाषा की कोई धार्मिक पहचान न हो बल्कि उसे सभी धर्मों एवं राज्यों के लोग अपनी अभिव्यक्ति एवं एक दूसरे से संवाद सहज रूप में कर सकें। स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम दौर में भाषा का भी सवाल तेजी से उठने लगा। और आजादी के बाद तो बहुत से राज्य केवल भाषा की अस्मिता को लेकर बने। भाषा की टकराहट इतनी अधिक बढ़ी की राजनेताओं को इसके लिए अनशन भी करना पड़ा। महात्मा गांधी जिनकी मातृभाषा गुजराती थी वे स्वयं चाहते थे कि राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का विकास हो और उसकी स्वीकार्यता भी आम जनमानस में सहज रूप से हो सके।

महात्मा गांधी दक्षिणी अफ्रीका से 1915 में भारत वापस आने के उपरांत भारतीय समाज की विविधता को समझने का प्रयास किए। इस विविधिता में भाषा की भी विविधिता थी। भाषा के आधार पर भी अलगाव था और आपस में संवाद की कमी भी थी। इस समस्या पर अभी का हल ढूँढने के लिए किसी ने कोई पहल नहीं किया था। गांधी ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसके लिए चिंतन किया और पहली बार जब उन्हें राष्ट्र भाषा पर अपनी बात रखने का मौका मिला तो तो उन्होंने हिन्दी को लेकर विचार व्यक्त किया। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग 29 मार्च 1918 को इंदौर के टाउन हाल में हिंदी साहित्य के आठवें अधिवेशन के समय सभापति के पद से कहा- “भाषा माता

Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

के समान है। माता पर हमारा जो प्रेम होना चाहिए वह हम लोगों में नहीं है। पचास वर्ष से हम अंग्रेजी के मोह में फंसे हैं, हमारी प्रज्ञा अज्ञान में डूब रही है। हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रांतीय सभाओं में और अन्य सभा-समाज और सम्मेलनों में एक भी अंग्रेजी का शब्द सुनायी न पड़े।"[1] गांधी भाषा की राजनीति को समझते थे इसलिए उन्होंने अपने देश के लिए किसी एक ऐसी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे जिसे अधिकांश लोग अपने दैनिक व्यवहार में लाते थे। गांधी जी का भाषा संबंधी चिंतन हिन्द स्वराज में भी देखने को मिलता है। " हर एक पढ़े-लिखे हिंदुस्तानी को अपनी भाषा का, हिन्दू को संस्कृत का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को पर्शियन का और सबको हिन्दी का ज्ञान होना चाहिए। कुछ हिंदुओं को अरबी, और कुछ मुसलमानों और पारसियों को संस्कृत सिखनी चाहिए।"[2]

गांधी के अंग्रेजी सीखने के खिलाफ नहीं थे, लेकिन उसका अनुचित प्रयोग उन्हें पसंद नहीं था। यानी जहां हिन्दी या अन्य भाषाओं से काम चल सकता हो वहाँ अनावश्यक अंग्रेजी के प्रयोग वह महत्व नहीं देते थे। इस संदर्भ में वह कहते हैं- "अब हमें अपनी मातृभाषा को और नष्ट करके उसका खून नहीं करना चाहिए। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्राप्त करें। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।"[3] हिन्दी राष्ट्र भाषा बने इसके लिए वह लोगों से आह्वान करते थे कि सभी लोग हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए अपना कर्तव्य समझें।" अंग्रेज इसके खिलाफ मुहिम चला रहे थे। वह मुसलमानों को हिन्दी के प्रयोग के खिलाफ़ भड़का रहे थे और कांग्रेस में शामिल न होने के लिए भाषा को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। इस संदर्भ में काका कालेकर लिखते हैं- "चंद अंग्रेज हिन्दीवालों को समझने लगे कि पठान और मुगलों जैसे मुसलमानों के आतंक से आपको छुड़वानेवाले हम ही हैं। हम आपको हिन्दी के प्रचार में मदद करेंगे। आप हिन्दी को उर्दू के प्रभाव से मुक्त कीजिए। दूसरी ओर मुसलमानों को कांग्रेस से दूर रहने के लिए समझना शुरू किया कि हम भारत के राज्यकर्ता बने उससे पहले आपलोगों का ही राज था इसलिए तो हमने रुपए के सिक्के पर अंग्रेजी के साथ उर्दू में लिखा है 'एक रुपया'। नागरी में लिखने से हमने इन्कार किया।"[4] गांधी अंग्रेजों के इस नीति के भलीभाँति परिचित थे इसलिए वह देवनागरी लिपि में हिंदुस्तानी की बात करते थे। गांधी जी ने दक्षिण भारत एवं आसाम, बंगाल व उड़ीसा के नेताओं को अपने समन्वयवादी नीति के तहत हिन्दी के लिए राजी कर लिया।

गांधी भाषा और संस्कृति के संदर्भ दूरद्रष्टा थे। वह हिन्दी को राष्ट्रीय एकता के रूप में भी देखते थे। वह राष्ट्रीय साहित्य के हिमायती थे। "यदि हिंदी राष्ट्रीय भाषा होगी तो साहित्य का विस्तार भी राष्ट्रीय होगा। साहित्य की दृष्टि से

---

1 सम्पूर्ण गांधी वांग्मय (14) -अक्टूबर1917- जुलाई 1918 पृ.सं. 277

2 महात्मा गांधी, *हिन्द स्वराज.* पृष्ठ 124

3 https://hi.wikipedia.org/wiki

4 हिन्दी के लिए गांधी का प्रयत्न, काका कालेकर (सं. राकेश पाण्डेय, *गांधी और हिन्दी*), पृष्ठ 239

Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भी हिंदी भाषा का स्थान विचारणीय है। हिंदी भाषा की व्याख्या का थोड़ा-सा ख्याल करना आवश्यक है। हिंदी भाषा वह भाषा है, जिसको उत्तर में हिंदू व मुसलमान बोलते हैं और जो नागरी अथवा फारसी लिपि में लिखी जाती है। यह हिंदी एकदम संस्कृतमयी नहीं है, न वह एकदम फारसी शब्दों से लदी हुई है। भाषा वही श्रेष्ठ है, जिसको जनसमूह सहज में समझ ले। भाषा का मूल करोड़ों मनुष्यरूपी हिमालय से मिलेगा और उसमें ही रहेगा। हिंदू-मुसलमानों के बीच जो भेद किया जाता है वह कृत्रिम है।"[5] गांधी भाषा में किसी भी कृत्रिमता के पक्षधर नहीं थे। वह हिन्दी भाषा को कबीर की तरह 'भाखा बहता नीर' के रूप में देखते थे। इसलिए वह बहुत संस्कृतनिष्ठ और उर्दू-फारसी से युक्त हिन्दी भाषा के पैरोकार नहीं थे बल्कि वे हिंदुस्तानी भाषा को तरजीह देते थे।

गांधीजी ने 1918 को दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की नींव डाली। दक्षिण में हिंदी को आगे बढ़ने के लिए उनको ऐसे होनहार व्यक्तियों की तलाश थी जो तमिल और तेलगु भाषी जनता में हिंदी का प्रचार करना ही अपने जीवन का ध्येय बनाने की दृष्टि से हिंदी सीखना शुरू करें। इन सभी को प्रयागराज (इलाहाबाद) या बनारस (वाराणसी) में रखकर इनको हिंदी सिखाई-पढ़ाई जाए इनका पूरा खर्च समिति उठाये। बाद इनको अच्छे वेतन पर कम से कम तीन वर्ष तक रखा जाए। बाद में इनकी सेवा अवधि को समिति बढ़ा सकती है।[6] 'हिंदी दूत' लोगों को दक्षिण के राज्यों तमिलनाडु-तिरुचिरापल्ली, हैदराबाद, कर्नाटक-धारवाड़, केरल-एर्नाकुलम[7] में भेजा गया, जहां पर हिंदी भाषा का ज्यादा प्रचलन नहीं था। इन पांच दूतों में महात्मा गांधी के सबसे छोटे बेटे देवदास गांधी भी थे। ये हिंदी दूत हिंदी के प्रचार के लिए सबसे पहले मद्रास (चेन्नई) पहुंचे । गांधीजी की प्रेरणा से सन 1936 में महाराष्ट्र के वर्धा जिले में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति स्थापित की गई। इसी कारण पहले विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर (10-12 जनवरी, 1975) में हिंदी को लेकर कई ठोस योजनाएं बनी, जिसमें हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए साथ ही एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। गांधी ने हिन्दी भाषा में ज्ञान मीमांसा के लिए जो सपना देखा था वह उनके जीवित रहते नहीं पूरा हो सके, लेकिन 21 सदी के शुरुआती वर्षों में उसने आकार लेना शुरू किया और गांधी के कर्म भूमि वर्धा में ज्ञान मीमांसा के लिए हिन्दी में एक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

भाषा और लिपि

29 दिसंबर 1916 को अखिल भारतीय एक भाषा व एक लिपि सम्मेलन में गांधी जी ने कहा- "भागीरथी की बड़ी अगाध महिमा है, ऐसा कहने से भागीरथी में स्नान का पुण्य नहीं मिल जाता उसी तरह यदि राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार करना है, तो उसके लिए भगीरथ जैसा प्रयत्न करना होगा।"[8] हिंदी को आगे लाने के लिए सबसे कहना होगा कि आप

[5] हिन्दी के लिए गांधी का प्रयत्न, काका कालेकर (सं. राकेश पाण्डेय, *गांधी और हिन्दी*) पृष्ठ 189

The Asian Thinker

Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सब सरकार को अपने प्रार्थना-पत्र अपनी भाषा या हिंदी में लिखें। गांधीजी ने कहा कि “धीरे-धीरे जब हिंदू-मुस्लिम में संदेह भावना नहीं रह जाएगी तो, जिस लिपि में अधिक शक्ति रह जायेगी और वही राष्ट्रीय लिपि होगी।”[9] गांधीजी ने अपने समाचार पत्र में स्पष्ट लिखा था कि “हमारी सामान्य लिपि देवनागरी हो सकती है। और कोई नहीं। देवनागरी के समान सरल, जल्दी सीखने योग्य और तैयार लिपि दूसरी कोई है ही नहीं। उर्दू या रोमन में भी वैसी संपूर्णता और ध्वन्यात्मक शक्ति नहीं है, जैसी देवनागरी में है। गांधी जी “रोमन के पक्ष में कभी नहीं रहे।”[10] साथ ही लिखते हैं कि- “मुझे मालूम हुआ है कि आसाम में कुछेक जातियों को देवनागरी की जगह रोमन लिपि में (असम में बोड़ो भाषा को रोमन में लिखने का प्रयास किया जा रहा था) लिखना-पढ़ना सिखाया जा रहा है। मेरी राय है कि अगर हिंदुस्तान में सर्वमान्य हो सकने वाली कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है, फिर भले ही उसमें सुधार की गुंजाइश हो या न हो।”[11] गांधी जी देवनागरी लिपि के वैज्ञानिक स्वरूप से परिचित थे और वे इसे सबसे उच्च स्तर की लिपि मानते थे। गांधी जी भाषा संबंधी अपने एक लेख ‘क्रोध नहीं मोह नहीं’ में भाषा और लिपि के संदर्भ में बहुत ही स्पष्टता के साथ अपने विचार रखें हैं। वे लिखते हैं- “ लिपियों में मैं सबसे आला दर्जे की लिपि नागरी को मानता हूँ। ... मैं मानता हूँ कि नागरी और उर्दू लिपि के बीच अंत में जीत नागरी लिपि की ही होगी। इसी तरह लिपि का ख्याल छोड़कर भाषा का ही खयाल करें तो जीत हिंदुस्तानी की ही होगी।” गांधी जी देवनागरी लिपि और जनमानस में व्याप्त हिन्दी भाष के पक्षधर थे। गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता में भी हिंदुस्तानी भाषा को ही तरजीह दिया न कि संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को।

गांधी की पत्रकारिता में हिंदी का आगमन-

गांधी की अहिंसात्मक लड़ाई, समाज सेवा, शिक्षा शास्त्री आदि कामों की पूरी दुनिया लोहा मानती थी, वहीं गांधी जी एक अच्छे पत्रकार भी थे। आजादी से पहले उन्होंने अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी और उर्दू के कई अखबार निकाले, जिसको वो आजादी के हथियार की तरह इस्तेमाल किया करते थे। गांधी का सामाजिक जीवन दक्षिण अफ्रीका से शुरू हुआ जहां वे वहाँ बसे गिरमिटिया मजदूरों के बीच किए। उनसे सम्प्रेषण के लिए भाषा सहज और सरल रखने के लिए अंग्रेजी के सीधे कहें शब्दों का प्रयोग करते थे। गिरमिटिया मजदूरों में तमिल भाषा के मजदूरों से बात करने के लिए गांधी जी ने तमिल भाषा का व्याकरण सीखना प्रारंभ किया, जिससे तमिल भाषी लोगों से बात चीत की जा सके। महात्मा के 1915 में भारत आने बाद 7 सितंबर 1919 को गुजराती में ‘नवजीवन’ साप्ताहिक पत्र का सम्पादन प्रारंभ किया। उसके एक माह बाद 8 अक्तूबर, 1919 से अंग्रेजी में ‘यंग इंडिया’ का प्रकाशन शुरू किया। गुजराती नवजीवन के दो वर्ष बाद 19 अगस्त 1921 को ‘हिंदी नवजीवन’ का प्रकाशन शुरू किया। इसके बाद गांधीजी ने यरवदा जेल (पुणे) से 11 फरवरी 1933 को हरिजन नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। महात्मा अपने पत्रों का जवाब हिंदी में ही देते थे, जिससे सबको पता चले की गांधी को भारत में केवल हिंदी ही आती है। 15 अगस्त 1947

Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

को बी. बी.सी. लंदन पर बोलते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि दुनिया वालों से कह दो, गांधी अंग्रेजी नहीं जानता। इसलिए यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में गांधीजी ने बहुत प्रयास किया था।

कोर्ट में हिंदी

महात्मा गांधी ने कानून की भाषा को भी जनता की भाषा में होने पर ज़ोर देते थे। इस संदर्भ में वे लिखते हैं- "कहना आवश्यक नहीं कि मैं अंग्रेजी भाषा से द्वेष नहीं करता हूँ। अंग्रेजी साहित्य भंडार से मैनें बहुत रत्नों का उपयोग किया है। अंग्रेजी भाषा से हमें विज्ञान आदि खूब ज्ञान लेना है। अंग्रेजी ज्ञान भारतीयों के लिए बहुत आवश्यक है। लेकिन इस भाषा को उसका उचित स्थान देना एक बात है, उसकी जड़ पूजा करना दूसरी बात है।"[12] इसीलिए हमारी कानूनी सभाओं में भी "राष्ट्रीय भाषा द्वारा कार्य चलना चाहिए।"[13] गांधीजी से जब भी यह प्रश्न किया जाता कि- आधिकारिक रूप से अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा है और इसे बदलने की बजाए ऐसे ही जारी रखा जाये क्योंकि लोग इस भाषा को भी भारत में समझने लगे हैं। इसके उत्तर में गांधीजी कहते थे कि अंग्रेजी से बेहतर होगा कि हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा बनाया जाए क्योंकि यह हिंदू- मुसलमान, उत्तर-दक्षिण को आपस में जोड़ने का काम करती है। महात्मा का यह भी मानना था कि "हिंदी का प्रयोग केवल बोलचाल और देश की आधिकारिक भाषा के तौर पर ही नहीं बल्कि हमारी अदालतों में जरूर राष्ट्रीय भाषा और प्रांतीय भाषा का प्रयोग होना चाहिए।"[14]

आजादी में हिंदी का प्रयोग

देश की आजादी के लिए 1857 से लेकर 1947 तक अनेक आंदोलनकारियों के साथ ही कवियों और पत्रकारों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन आंदोलनकारियों की गौरव गाथा को जन मानस तक सहजता से पहुँचाई, जिससे हम आज भी प्रेरणा लेते हैं। वीर सावरकर की '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो या लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीतारहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिंता छोड़ देश की खातिर स्वतंत्रता के महासमर में उतरते देर न लगाई । गांधीजी की भूमिका एक हिंदी प्रचारक के रूप में देखी जा सकती है। गांधी जी अपने सभाओं में हिंदी में बोलते थे, जिससे सभी वर्ग के लोग आसानी से संप्रेषित हो जाते थे। आजादी के समय जितने भी नारे लगते अधिकतर हिंदी में ही होते थे। जैसे- वंदे मातरम्, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा, जय हिंद, स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा आदि इससे यह सिद्ध होता है कि हिंदी की संप्रेषणीयता अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक थी।

12 सम्पूर्ण गांधी वांग्मय(14)-अक्टूबर1917-जुलाई1918 पृ.सं.246

13 वही

14 सम्पूर्ण गांधी वांग्मय(14)-अक्टूबर1917-जुलाई1918 पृ.सं.280

Year-6 Volume: IV, October-December, 2024 Issue-24 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

राष्ट्रभाषा हिंदी-

बापू कहते हैं कि “अगर हिंदुस्तान को सहमुच एक राष्ट्र बनना है, तो चाहे कोई माने या माने, राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है,क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता।”[15] इंदौर अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में जो खास बाते थीं उनमें एक बात अधिक जोर दिया गया कि प्रांतीय भाषाओं को खत्म नहीं करना है वही भाषाएं हिंदी को और शिष्ट करती हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गांधीजी की दृष्टि में सम्पूर्ण भारत के लिए सम्पर्क भाषा की शक्ति केवल हिंदी में ही निहित है। अपने भाषणों, पत्र-पत्रिकाओं, संस्थाओं,सम्मेलनों के माध्यम से पूरे जीवन हिंदी की सेवा करते रहे। देश को अपनी भाषा से प्रेम करने की प्रेरणा दी। उनका हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने का सुझाव राष्ट्र के लिए पत्थर का मील साबित हुआ। वे हिंदी को राष्ट्रीय एकता लिए आवश्यक साधन के रूप में देखते थे।

निष्कर्ष

गांधी जी के लिए भाषा महज अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है। बल्कि राष्ट्र के भविष्य और समाज के उद्देश्य के साथ है। गांधी जी ने राष्ट्र भाषा के लिए लिए जिस हिन्दी की संकल्पना की थी उसे संविधान सभ ने 14 सितंबर 1949 को एक खास टिप्पणी के साथ राज भाषा के रूप में स्वीकार्य कर लिया। हिन्दी आज भले ही आधिकारिक रूप से राजभाषा के रूप में दर्ज है लेकिन वह आज भी द्वितीयक भाषा के रूप में व्यवहारित है। लेकिन हिन्दी आज राष्ट्र भाषा से आगे निकलकर वैश्विक पटल पर अपनी दस्तक दे रही है और तकनीक की भी भाषा भी हिन्दी बन रही है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि गांधी जी ने अपनी दूर दृष्टता हिन्दी भाषा के लिए जो प्रयास किया था वह आज सार्थक होता दिख रहा है।

संदर्भ-

[1] सम्पूर्ण गांधी वांग्मय (14) -अक्टूबर1917- जुलाई 1918 पृ.सं. 277

[2] सम्पूर्ण गांधी वांग्मय(14)-अक्टूबर1917-जुलाई1918 पृ.सं.284

[3] https://hi.wikipedia.org/wiki

[4] सम्पूर्ण गांधी वांग्मय(13)-जनवरी1915-अक्टूबर1917 पृ.सं.325

[5]1917 में गुजराती शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण

[6] हरिजन सेवक 18.2.1939

[7] 18 फरवरी1939 के हरिजन सेवक

[8] सम्पूर्ण गांधी वांग्मय(14)-अक्टूबर1917-जुलाई1918 पृ.सं.280

15 वही

The Asian Thinker

[9] राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी लेखक मोहनदास करमचंद गांधी अनुवाद काशिनाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद पृ.सं.44

10- गांधी और हिन्दी (सं.) राकेश पाण्डेय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली

***

The Asian Thinker